'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १२८ | वाराणसी, शनिवार, ७ नवम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

अच्छाबल (जम्मू-कश्मीर) १९-९-'५९

इल्म, अमल और मुहब्बत से ही काम होता है

आज की मीटिंग को यह जगह बहुत ही खूबसूरत है। वैसे तो यह सारा का सारा प्रदेश ही खूबसूरत है, मगर यह जगह विशेष खूबसूरत है। आपको ठंडी और खुली हवा मिलती है। जगह-जगह पानी बहता नजर आता है। यह मंजर दूसरे सूबों में इतना देखने में नहीं आता। अभी हम राजस्थान, मारवाड़ से आये हैं। वहाँ हमने रेत ही रेत फैली देखी। पानी के लिए सौ-सौ हाथ गहरे कुएँ खोदने पड़ते हैं। तब भी वहाँकी कुदरत तो खूबसूरत है ही। उगते वक्त तथा डूबते वक्त सूरज के दर्शन होते हैं। उस समय का भी एक अनोखा नजारा रहता है। यहाँ हमें वहाँकी तरह सूरज के दर्शन नहीं होते, क्योंकि यहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। इस तरह सोचें तो हमें दीख पड़ेगा कि कहीं कुछ कमी है तो कहीं कुछ। कुदरत में तरह-तरह की खूबसूरती है, यह मानना पड़ेगा।

दिमाग ठंडा हो, दिल गरम

आज एक भाई ने पूछा कि आप कश्मीर में घूमे, यहाँकी अवाम के साथ आपकी वाकफियत हुई तो आपने क्या तजुर्बा हासिल किया? हमने कहा कि जैसी यहाँकी हवा है, वैसे ही यहाँके लोगों के दिमाग भी ठंडे हैं। ठीक इसके विपरीत जम्मू में, हवा गरम रहने के कारण, लोगों के दिमाग भी गरम हैं। कश्मीर में मुख्तलिफ सियासी पार्टियों के रहने के बावजूद लोगों के दिमाग ठंडे हैं, यह आश्चर्य की बात है। नैशनल कॉन्फ्रेन्स, डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेन्स, महज रायशुमारी, पॉलिटिकल कॉन्फ्रेन्स—वगैरह मुख्तलिफ पार्टियों के लोग मुझसे मिले। उनसे बात करके मैंने यही महसूस किया कि कुल मिलाकर उनके दिमाग ठंडे हैं। हमें उन लोगों के विषय में बड़ा प्यार है। क्योंकि वे ठंडे दिमागवाले हैं, जिसकी आज सख्त जरूरत है। साथ ही जरूरत है कि गरम मुल्कवालों के भी दिमाग ठंडे हों।

कश्मीर में, जहाँ बहुत ठंडी हवा है, वहाँ दिल भी ठंडा है, यह बात है तो बहुत ठीक; परन्तु जरा आश्चर्य में डालनेवाली है। जहाँ बरफ के ढेर हों, वहाँ तो दिल वास्तव में गरम होना चाहिए। दिमाग गरम और दिल ठंडा हो तो मनुष्य सुस्त बनेगा, आलसी बनेगा। कुछ भी काम वह नहीं करेगा, खाली बैठा रहेगा। इसलिए होना यह चाहिए कि दिमाग ठंडे हों और दिल गरम।

कश्मीर की समस्या

अपने आपको इस तरह का बनाने के लिए केवल एक इलाज है। हम अपने दोनों हाथों से बराबर काम करते रहें। कभी बेकार न बैठें। एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर काम करें। कश्मीर का मसला यही है कि यहाँ जाड़े के दिनों में छह महीनों तक कोई काम नहीं रहता। बरफ के कारण लोग घर में ही बैठे रहते हैं। उस खाली वक्त में भी लोगों को जरूर काम मिलना चाहिए। इसलिए हम सोचते थे कि गाँव-गाँव में दस्तकारियाँ खड़ी करनी होंगी। ऐसा करने से लोगों को बारहों महीने काम मिलेगा। सारा गाँव अपनी ही बनायी हुई चीजों को इस्तेमाल करेगा। हम चीजें पैदा कर अगर उन्हें बाहर भेजें तो झमेला होगा। अपनी जरूरत भर की चीजें स्वयं इस्तेमाल करें। बाकी बची हुई चीजें बाहर भी भेज सकते हैं। यहाँ ऊनी कपड़ा ज्यादा होता है, सूती कपड़ा भी इस्तेमाल में आता है। मेरे हिसाब से हर मनुष्य को साल भर में २० रुपये का कपड़ा लगता होगा। ४० लाख लोग यहाँ हैं। उनके लिए ८ करोड़ रुपये का कपड़ा तो कानपुर, इंदौर, अहमदाबाद से आता होगा। यहाँकी बेकारी की समस्या का हल एकमात्र यही है कि कपड़ा यहीं बनाना होगा।

जम्मू में कपास होता है। बहनें कात सकती हैं। ऊन भी कात सकती हैं, सूत भी। घर-घर में चरखा पड़ा है, कातने का फन भी लोगों को मुहैया है। गरज भी है। ऐसी स्थिति में यह धंधा भी शुरू हो जाय। गांधीजी के कहे मुताबिक खेती के साथ-साथ यह सहायक धंधा भी शुरू हो जायगा। बच्चे भी कात सकते हैं। मुझे याद है कि हमारे आश्रम में चार साल का लड़का कातता था। घर के सब लोग वक्त मिलने पर कातें तो घर में ही सेल्फ-इम्प्लायमेण्ट मिल जायगी। घर में बैठे-बैठे ही बेकार को दूर करने की तरकीब निकल आयेगी। हम कुछ भी रोजगार न करें, बेकार बैठे रहें तो दिल ठंडा बन जाता है। ऐसा होने से दिल की ताकत भी टूट जाती है। इससे दिमाग अपने

www.vinoba.in

काम नहीं कर पाता। इसलिए यहाँ दिमाग ठंडा रहने पर भी दिल में जोश लाने के लिए काम करना ही होगा।

इसी प्रकार दिल में जोश लाने के लिए एक काम और यह करना होगा कि गाँव का मंसूबा गाँव को ही मिल-जुलकर करना चाहिए। देहात का मंसूबा दिल्ली क्यों करे? कौन धंधे किस तरह खड़े करने हैं, कौन जमीन किस तरह तकसीम करनी है, जमीन की मालकियत किस तरह मिटानी है, वगैरह सभी काम गाँववालों को ही तय करने चाहिए।

ग्राम-स्वराज्य से ही आजादी संभव

आज गाँव में मुख्तलिफ लोग रहते हैं, लेकिन एक जमात नहीं बन पाती। इसलिए जरूरी यह है कि जमीन की मिल्कियत मिट जाय। यह मिल्कियत मिटाने का काम कानून से नहीं, प्यार से संभव होगा।

ग्रामदान का पहला काम जमीन की मिल्कियत मिटाना ही है। इसके बाद उपज बढ़ाने के तरीकों को इस्तेमाल किया जा सकता है। वे तरीके साइन्स की ईजाद हैं? गाँववाले मिलकर, सोच-समझकर उन तरीकों को अपनायें। गाँव में रोजमर्रा की चीजें तैयार करें। दस्तकारियाँ भी खड़ी करें, इसीका नाम है—ग्राम-स्वराज्य।

१५ अगस्त को कुल शहरों में झंडा फहराया होगा, जुलूस निकले होंगे, तकरीरें हुई होंगी। लेकिन आजादी की हरारत गाँव-गाँव में नहीं हुई है। सूरज उगता है तो सिर्फ श्रीनगर और दिल्ली में उगता है और बाकी गाँवों में उसका ढिंढोरा पीटकर जाहिर करना पड़ता है, ऐसी बात नहीं है। वह जब भी उगता है, तब सभी शहरों और गाँवों में एक साथ ही उगता है। उसकी किरणें घर-घर पहुँचती हैं। बच्चा-बच्चा उसकी हरारत महसूस करता है। वैसे ही हर शख्स को यह महसूस होना चाहिए कि हम आजाद हुए हैं। सूरज के उगने की तरह ही आजादी का उगना होना चाहिए। याने हर घर में लोगों को आजादी का एहसास होना चाहिए।

अभी इफ्तसादी आजादी हासिल नहीं हुई है, केवल सियासी आजादी हासिल हुई है। इफ्तसादी आजादी हासिल हुई, ऐसा तो तब माना जायगा, जब गाँव-गाँव में ग्रामदान होगा, ग्राम-स्वराज्य होगा। ग्रामदान की बुनियाद पर ग्राम-स्वराज्य खड़ा होगा। यह सब काम करने के लिए दिल गरम होना चाहिए। दिल गरम होगा, तभी दिमाग काम करेगा।

ये तीनों एक हैं

आज एक भाई ने एक बात पूछी कि इन्सान को भक्ति की राह लेनी चाहिए या काम की? अमल की राह लेनी चाहिए या इल्म की? इसपर मेरा कहना यह है कि ज्ञान, अमल, मुहब्बत, —ये तीन अलग-अलग राहें नहीं हैं। इल्म, अमल और मुहब्बत की तीन अलग राहें होंगी तो जिंदगी के टुकड़े हो जायँगे, यह समझना चाहिए। तीनों एक साथ होने चाहिए। तीनों के एक जगह मिलने से एक राह बनती है। मान लीजिये, हमें बीमार की सेवा करनी है और हमारे पास इल्म, मुहब्बत न हो तो खिदमत कैसे हो सकती है? इल्म न रहने के कारण हम गलत काम करेंगे। बीमार को गलत चीज खिला देंगे। इसका नतीजा बुरा आयेगा। मुहब्बत न हो तो रात में जागने का काम नहीं हो सकता। बीमार चिढ़ता है, गुस्सा करता है, यह सब बर्दाश्त करने के लिए भी मुहब्बत चाहिए। इस तरह इल्म और मुहब्बत न हो तो बीमार की सेवा करते-करते मनुष्य ऊब जायगा। इसलिए दोनों का होना लाजमी है। इन दोनों के साथ-ही-साथ काम करने की आदत भी होनी चाहिए। बीमार का कपड़ा धोना होगा, खाना बनाना होगा। इसलिए बीमार की सेवा करने के लिए इल्म, अमल (काम), मुहब्बत—ये तीनों चीजें जरूरी हैं। इल्म होना चाहिए, दिल में सब्र होना चाहिए। और अमल करने की कूवत होनी चाहिए। इसपर से आपके ध्यान में यह बात आ जायगी कि तीनों चीजें एक ही हैं।

आपने बर्फी का टुकड़ा खाया याने उसका वजन, मिठास, शेप—सभी कुछ खाया। खोआ, शक्कर, भी खाया। इन चीजों को आप अलग नहीं कर सकते। जहाँ सूरज की रोशनी आयी, वहाँ उसकी गरमी भी जरूर ही आयेगी। समझना चाहिए कि जिन्दगी में अमल, इल्म, प्यार सब होना चाहिए। अगर यह सब नहीं होंगे तो जिन्दगी के टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे।

अगर बाबा के पाँव कहते कि हम आठ साल से धूप, बारिश, ठंड में चलकर बहुत थक गये हैं तो यात्रा खत्म हो जाती। इसलिए मैं पाँवों की खुशामद करता हूँ। नहाने के समय, गुसल के समय पाँव को मलता हूँ। दबाता हूँ। इससे पाँव समझते हैं कि बाबा के दो हाथ हमारी सेवा, खिदमत करते हैं। हमें नीच नहीं मानते। इसलिए वे चलने से इन्कार भी नहीं करते। अगर वे इन्कार करते तो यात्रा कब की खत्म हो चुकती। लेकिन हाथ पाँव की सेवा करते हैं, यूँ समझकर कि पाँव को भी जरूरत है। इस तरह पाँव जरूरी हैं। यह तो हुई पाँव की बात, लेकिन जबान नहीं है तो बाबा की तकरीर कैसे होगी? मूसा को अल्लाह ने कहा कि 'जाओ, समझाओ' तो मूसा ने कहा कि 'मुझे मदद दो, मुझे जबान नहीं है,' तब अल्लाह ने मूसा को जबान दी। इसलिए बोलने की, चलने की दोनों की कूवत चाहिए। मान लीजिये कि ये दोनों हैं, मगर दिल में प्यार नहीं है तो जो बोलेगा, केवल दिल में नफरत पैदा करेगा। इसके लिए अक्ल चाहिए। अक्ल न रहे तो सब कुछ होने पर भी बोलना ही नहीं सूझेगा। इसलिए यह जरूरी है कि अक्ल, मुहब्बत, दिल में प्यार, पाँव—यह सबके सब रहें। ऐसा होगा, तभी भूदान-यात्रा चलेगी।

इसलिए आपके इस प्रश्न का कि हम अक्ल की राह पर चलें, मुहब्बत की राह पर चलें या अमल की राह पर, जवाब हम यही देंगे कि ये तीन अलग राहें नहीं हैं। तीनों चीजें एक ही हैं। जैसे—$H_2 + O$ = पानी याने कि दोनों चीजें मिलेंगी, तभी पानी होगा, इसी तरह से इमान, अमल और प्यार, इल्म, अमल, इमान या प्यार, तीनों इकट्ठा होंगे, तब काम बनेगा।

आपकी सरकार ने १८२ कनाल का सीलिंग बनाया है, यह अक्ल का काम किया है। लेकिन इतने से प्यार पैदा नहीं हो सकता। इसलिए कानून बेकार जाता है। बेकार बनाने का खयाल न रहने पर भी बेकार बनता है। लेकिन सीलिंग से हुआ क्या है? जमीन मालिकों से ली गयी और मुजारों में बाँट दी गयी। अभी तक प्यार नहीं पैदा हो सका है। प्यार पैदा होगा, तभी कुछ काम हो सकेगा, मसले हल होंगे। अक्ल और प्यार दोनों को जोड़ने की तरकीब निकलेगी, तभी मसले हल होंगे। वह तरकीब निकालने का काम भूदान-ग्रामदान कर सकता है।

चुनाव की तरह ही इस काम में लगिये

एक भाई पूछते थे कि इस तरह माँगते फिरोगे तो कब तक यह काम चलता रहेगा? इस तरह कब तक घूमते रहोगे?

www.vinoba.in

आपकी रफ्तार बहुत धीमी है। इसपर मैं पूछता हूँ कि आज के दिन भूदान के लिए कश्मीर में कितनी मीटिंगें हो रही हैं। तमाम कश्मीर में आज यह मीटिंग हो रही है, वह भी अच्छाबल में। दूसरा सवाल हम पूछना चाहते हैं कि चुनाव में एक दिन में कितनी मीटिंगें होती हैं? एक दिन में पचास-पचास मीटिंगें होती हैं; क्योंकि सबने मिलकर सोचा है कि चुनाव करना है। उसी तरह इस सम्बन्ध में भी सोचेंगे, तभी काम बनेगा। यहाँ मेरा काम एक ही भूदान-सरदार (इस विभाग के एम० एल० ए०) करते हैं।

एक बुढ़िया थी, उसको कोई बेटा नहीं था। हुआ ही नहीं था। आखिर उसने एक बेटा दत्तक ले लिया। इसी तरह से इस विभाग में मेरा यह एक बेटा है। वही काम कर रहा है। मेरे कहने का मतलब यही है कि जैसे आप चुनाव में लगते हैं, वैसे ही इस काम में भी लगिये। ऐसा होने से आपने अक्ल का काम किया, ऐसा माना जायगा। भूदान-ग्रामदान करोगे तो वह प्यार का काम होगा। आपकी अक्ल और अवाम का प्यार दोनों मिलकर ही काम हो सकता है। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पर्नाला (जम्मू-कश्मीर) २७-५-'५९

जातिभेद, पक्षभेद और धर्मभेद मिटाकर सहयोगी समाज बनाइये

गाँव-गाँव में लोग रहते हैं। मेरा खयाल है कि इधर के ये गाँव हजारों बरसों से बसे हुए हैं। अभी हम इस गाँव को देखने गये थे। एक घर इधर है, एक उधर। गाँववाले पहाड़ों में कुदरत के साथ रहते हैं, खेती करते हैं और जीवन का गुजारा चलाते हैं। हजारों बरसों से ऐसा ही चल रहा है।

आज यहाँकी सभा में अनेक गाँवों के लोग आये हैं। इसी तरह से समाज बनता है। इन दिनों जो समाज बनता है, वह अलग-अलग प्रकार का होता है। किसीका कपड़ा लाल है, किसीका सफेद। किसीका कपड़ा केशरी है तो किसीका नीला। तरह-तरह के रंगोंवाले कपड़े कहाँसे आते हैं? कुछ लोग छाता लेकर बैठे हैं। यह छाता कहाँसे आया? यहाँ तो वह नहीं बना है। आपके इस्तेमाल की चीजें बाहर से आती हैं। ऐसे छोटे से गाँव में दूसरे प्रांतों से और परदेश से भी माल आता है और गुजारा होता है। इसीलिए हमने कहा कि यह मिला-जुला समाज है।

जातियाँ काम के बँटवारे की प्रतीक

आज हमने कुम्हार, बढ़ई के घर देखे। वे सारे पुराने कारीगर हैं। लेकिन अब पुरानी कारीगरी से नहीं चलेगा। अब तो हमें नये प्रकार की दस्तकारियाँ सीखनी होंगी और अपना समाज बसी, व्यापक बनाना होगा। 'यह मेरा घर', 'ये मेरे बच्चे' यह कहने से अब नहीं चलेगा। इसलिए हमें इसके आगे कुल गाँव का सोचना, देखना चाहिए। हम भूदान देते हैं, लोगों में जमीन बाँटते हैं, तकसीम करते हैं। परन्तु दरअसल है क्या? देनेवाला देता है और लेनेवाला लेता है। हम कौन हैं? बीच के? हम तो बाहर से आये हैं। बाहर से कोई मनुष्य आता है, बात समझाता है तो दिलको बात जँचती है। इससे गाँव में प्रेम-समाज बनता है। सबसे ज्यादा ताकत प्रेम में है। इसलिए सबसे बड़ी चीज प्रेम है। यह प्रेम बाल-बच्चे के लिए भी है। इसलिए माताओं के दिल में बाल-बच्चों के लिए प्रेम होना चाहिए। प्रेम को कैदी नहीं बनाना चाहिए। मेरा मेरे बच्चे पर बहुत प्रेम है। लेकिन पड़ोसी के बच्चे से नफरत है। मेरे दिल में अपनी जातवाले के लिए प्यार है, लेकिन दूसरी जातवाले मेरे कुछ नहीं लगते हैं, मनमें ऐसा खयाल नहीं होना चाहिए। सब इन्सान एक हैं। कुम्हार मिट्टी के बरतन का काम करता है। लुहार लोहे का, चमार चमड़े का, रंगरेज रंगने का काम करता है। इस तरह जो-जो काम करता है, वही उसकी जाति हो गयी। कपड़ा धोने का काम करनेवाला धोबी हो गया। लकड़ी का काम करनेवाला सुनार हो गया। इसी तरह बुनकर, शिक्षक, किसान, मजदूर हैं। ताने में बाना, बाने में ताना इसपर धागा पिरोया तो कपड़ा बन जाता है। वैसे समाज का कपड़ा बनना चाहिए। ब्राह्मण, हरिजन, धोबी, रंगरेज, बुनकर, किसान वगैरह सब एक-दूसरे में पिरोये हुए हैं। उनमें ऊँचा कौन और नीचा कौन? एक ब्राह्मण मर गया उसे जलाया गया, उसका क्या बनेगा? खाक बनेगी। भस्म बनेगी। चमार को जलाया तो उसकी भी खाक बन गयी। यह नहीं कि ब्राह्मण को जलाया तो सोना हो गया, किसान की चाँदी हो गयी या लुहार को जलाया तो लोहा हो गया। सबकी भस्म बनती है, यह बात बच्चा भी जानता है। जन्म में समान, मृत्यु में भी समान। गरीब हो या अमीर हो, जब पैदा हुआ तो नंगा, मर गया तो भी नंगा। बीच में हम अहंकार करते हैं, गरूर करते हैं। प्यास, भूख, नींद, गुस्सा, प्यार यह सबको समान होता है।

ये जातियाँ जो बनी हैं, वे काम के लिए बनी हैं। सब मिलकर काम बनता है। अकेले से कोई काम नहीं हो सकता। इसलिए काम का बँटवारा करना पड़ा है। उसे नाम दिया गया जाति। इसका मतलब कोई ऊँचा है और कोई नीचा है, ऐसा नहीं है। जैसे ये हाथ, पाँव आदि सब मेरे हैं। आज हम चलकर आये। पहाड़ी रास्ता और वह भी लंबा रास्ता होने से पाँव थक गये। यहाँ आने के बाद स्नान किया तो हाथों ने पाँव को रगड़ने का, मालिश करने का काम किया। सोचा कि बेचारा पाँव थका होगा। अगर हाथ उसे कहता कि तू नीचा है, तू मिट्टी पर, जमीन पर चलता है, इसलिए मैं तुझे नहीं छूऊँगा तो पाँव भी कहता कि "अब हम भी एक कदम आगे नहीं चलेंगे।" बस यात्रा खत्म हो जाती। फिर जम्मू-कश्मीर जाना न होता। पाँव और हाथ एक-दूसरे पर प्यार न करें तो यही नतीजा आयेगा। इस वास्ते पाँव नीचा है और हाथ ऊँचा है, ऐसा नहीं। जो कीमत हाथ की है, वही पाँव की भी है। इसी तरह समाज में जातियाँ बनीं। उनमें कोई ऊँचा, नीचा नहीं है। सब परमेश्वर की संतान हैं। हमने न्याय किया या अन्याय, इसका जवाब हमें ईश्वर के सामने देना पड़ेगा। ईश्वर कहेगा, हमने तुम्हें मनुष्य का चोला दिया तो तुमने उसका क्या उपयोग किया?

www.vinoba.in

आकार अलग-अलग, पर असलियत एक

भगवान को कैसे पहचानना ? भगवान छोटी चीज नहीं है। इसलिए किसीकी पकड़ में नहीं आता। छोटा होता तो पकड़ में आ जाता। आपने हाथी देखा है ? एक बार एक हाथी को चार अन्धे टटोलने लगे। एक ने पाँव टटोला तो कहा, हाथी याने खंबा है। दूसरे ने कान छुआ और बोला, हाथी याने पंखा है। अन्धों के हाथ में एक-एक हिस्सा आ गया, तब भी वे उसे नहीं पहचान सके। फिर परमेश्वर तो बहुत बड़ा है। कोई कितनी भी कोशिश करें तो भी उसे वह पहचान नहीं सकता। भगवान के जो अलग-अलग गुण हैं, उन्हें ध्यान में लेकर ही अलग-अलग धर्म बने हैं। उनके अनन्त गुण हैं। किसीने एक पर ध्यान दिया, किसीने दूसरे पर। इसीसे तरह-तरह की प्रथाएँ चालू हुईं। आज हम एक हरिजन के पास गये थे। हमने उससे पूछा, तुम भगवान का नाम क्या लेते हो ? उसने कहा, राम, कृष्ण। परमेश्वर के नाम अनन्त हैं। कुरानशरीफ में आता है कि पैगम्बर दो नाम लेते थे—अल्लाह और रहमान। किसीने उनसे पूछा : "आप दोनों नाम लेते हैं तो अल्लाह का असली नाम कौन सा है ?" तब पैगम्बर ने जवाब दिया : "अरे, जो अल्लाह है वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्लाह है।" जो नारायण है, वही गोविंद है और जो गोविन्द है, वही नारायण है। बुद्ध है, वही सिद्ध है और सिद्ध है, वही बुद्ध है। जो विष्णु है, वही शंकर है और जो शंकर है, वही विष्णु है। लेकिन किसीको यह रूप खींचता है, किसीको वह रूप खींचता है। इस लड़की ने हरा कपड़ा पहना है, उसने नीला, लेकिन दोनों एक ही चेतन हैं। हमें बचपन में पिताजी कपड़े की दूकान में ले गये थे। उस समय मेरी उम्र लगभग ९, १० साल की होगी। दूकान में छपाई के अलग-अलग रंग थे। पिताजी पूछते थे, क्यों यह रंग अच्छा है ? मैं 'हाँ' कहता था। आठ या दस आने गज का कपड़ा होगा। आखिर वे ही तय करते थे। बीच-बीच में मुझे इस तरह पूछते थे। मैं 'हाँ' 'हाँ' कहता था। आखिर प्रश्न खत्म हुए और हम पिताजी के पंजे से छूटकर घूमने चले गये। मतलब कपड़े के अलग-अलग रंग होते हैं। हरएक की पसन्द अलग-अलग होती है। वैसे ही किसका नाम लेना, यह अपना-अपना जायका होता है। खोआ, शक्कर एक ही होती है, लेकिन पेड़ा, बर्फी आदि मिठाई अलग-अलग प्रकार की होती है। चीज एक ही होती है। लेकिन शकल में फर्क होता है। किसीको लड्डू पसन्द है, किसीको पेड़ा। आकार अलग-अलग हैं। अन्दर की चीज एक ही है। असलियत एक ही है। यह खयाल होना चाहिए।

इस तरह अंदर की एकता महसूस कर, सारे गाँव को परिवार मानकर गाँव की सेवा करनी चाहिए। सिर्फ घर की सेवा नहीं करनी चाहिए। सबकी सेवा में घर की सेवा आ ही जाती है। हम सबकी सेवा करते हैं तो अपनी भी करते ही हैं। घर की भी करते हैं। इसलिए सारा गाँव अपना ही एक परिवार है, यह भावना करके सोचना, काम करना चाहिए।

बड़ों के झगड़े में नहीं पड़ेंगे

इन दिनों एक नयी खतरनाक बात निकली है—अलग-अलग पार्टियों के खयाल। मुझे तो उनके नाम भी याद नहीं रहते। क्या भगवान के नाम हैं जो याद रखूँ ? पार्टी याने क्या ? गाँव को आग लगानेवाली, गाँव में झगड़ा करानेवाली, गाँव के टुकड़े करानेवाली। गाँवको आग क्यों लगानी चाहिए ? गाँववाले का यह काम है कि गांव के टुकड़े न होने दें। वे उन पार्टीवालों से कह दें कि तुम हमारे गाँव में झगड़ा क्यों लाते हो ? आग क्यों लगाते हो ? तुम हमारे गाँव में मत आओ। ये सारे बड़े लोगों के झगड़े हैं। इसके बीच में छोटों को तबाह होना पड़ता है। यहाँ आना है तो प्रेम की बात करनी होगी। इस तरह उनको समझायेंगे। ये झगड़े सिर्फ-जम्मू, कश्मीर में ही नहीं, बल्कि भारत में भी हैं। पाकिस्तान, लंका आदि दूसरी जगहों में भी हैं। आज अखबार का पहला पन्ना खोलिये। मारपीट, डाँट, लूट, हत्या, ऐसी खबरें रहती हैं। हमें तो तय करना चाहिए कि बड़ों के झगड़े में हम नहीं पड़ेंगे। (बच्चों को यह राग में गाने के लिए कहा। बच्चों ने तीन बार गाया कि हम बड़ों के झगड़े में नहीं पड़ेंगे।)

बच्चों की जबान से जो शब्द निकलता है, वह भगवान का शब्द होता है। हम इस सभा में यह प्रस्ताव पास करते हैं।

गोकुल की बात है। भगवान कृष्ण छोटे थे। एक शख्स ने गोकुल को आग लगा दी। भागवत में वर्णन है, जैसा हम पानी पीते हैं, वैसे भगवान कृष्ण वह आग पी गये। आग लगानेवाले पहले भी थे। आज भी हैं। लेकिन आज आग पीनेवाले कहाँ हैं ? इस वास्ते उन पार्टीवालों को यह कह दो कि आज आग पीनेवाले भगवान नहीं हैं। इसलिए आप हमारे गाँव में आग मत लगाइये। हमें एहतियाती से, सावधानी से रहना चाहिए। नहीं तो चोर आयेगा। गाड़ी में यही लिखा रहता है : एहतियात से रहो, सावधानी से रहो।

मैं आपको कहना चाहता हूँ कि गाँव में जाओगे तो यही कहते-कहते जाइये। अभी बच्चों ने गाया, वैसे आप भी गाइये। कुल गाँव को एक बनाओ। गाँव में कभी फूट नहीं पड़ेगी। हम गाँव को एक परिवार बनायेंगे, मजबूत बनायेंगे। तो हमारे गाँव में फूट नहीं पड़नी चाहिए, यह फिक्र रखनी होगी। मैं दान माँगता हूँ। भूदान से दिल एक होते हैं। दिल को जोड़ने के लिए, जाति के झगड़े, धर्म के झगड़े, स्वार्थ के झगड़े, पार्टियों के झगड़े मिटाने के लिए यह हमारा काम चल रहा है।

हमारा कहना यही है कि शांतिसेना का काम गाँव में बने। गाँव की सेवा के लिए सेवक बाहर आयें। जातिभेद, पक्षभेद, धर्मभेद सब मिटा दें—यही बाबा की बात है। ◆◆◆

अनुक्रम

१. इल्म, अमल और मुहब्बत से ही काम होता है
अच्छाबल १९ जुलाई '५९ पृष्ठ ७५९
२. जातिभेद, पक्षभेद और धर्मभेद मिटाकर सहयोगी समाज बनाइये
पनाला २७ मई '५९ ,, ७६१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in